हिन्दी दलित कहानी में व्यवस्था विरोधी स्वर के स्वरूप का अध्ययन
(सन् 1995 से 2014 तक)

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा, की पी–एच0डी0 (हिन्दी) की
उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित
रूपरेखा एवं उद्देश्य

सन्–2015

निर्देशकः | **शोधार्थिनीः**

डॉ0 सूरज प्रकाश
अंसिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
कला संकाय

नीलम

हिन्दी विभागाध्यक्ष

प्रो. शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो. रागिनी रॉय

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा – 282005

हिन्दी दलित कहानी में व्यवस्था विरोधी स्वर के स्वरूप का अध्ययन

(सन् 1995 से 2014 तक)

विषय प्रवेश–

आज हिन्दी दलित साहित्य ने अपनी पहचान स्थापित करते हुए सामाजिक मूल्यों और साहित्यिक विमर्श में अपना पक्ष दृढ़ता के साथ रखा है और साहित्य को समाज सापेक्ष और वस्तुनिष्ठ बनने की प्रक्रिया से जोड़ने की पहल की है। दलित साहित्य को लेकर आज भी हिन्दी क्षेत्र में बहुत शोर मचा है। अभिजन या अभिजन मानसिकता वाले आलोचक और साहित्य के पक्षधर संपादक कला की लाठी से दलित रचनाकारों को हांकते हैं। वे उन पर यह आरोप भी लगाते हैं कि दलित साहित्यकारों की न तो अपनी कोई भाषा है न ही सौन्दर्य। लेकिन सार्थक कहानी वही है जो मन को कचोट जाये और जिससे समाज में कोई परिवर्तन की राह बने, रोशनी दिखे। साथ ही समाज के हाशियाकृत या छूट गये समुदायों को, उनकी परेशानियों को, साहित्य में लाकर समाज को संवेदनशील बनायें। इसके लिए आवश्यक है कि सौन्दर्यशास्त्र के परम्परागत मानदण्डों और कसौटियों का मोह त्याग दिया जाये।

दलित साहित्य जातिवादी मानसिकता में परिवर्तन के लिए लिखा जाने वाला साहित्य है। यह एक बहुत विशाल समुदाय के सामाजिक सरोकार और अधिकार के लिए संघर्षरत साहित्यकारों का साहित्य है। इसलिए दलित कहानियों के यथार्थ को जानने और समझने के लिए, सदियों से आज तक के इतिहास को सामने रखते हुए आज भी प्रचलित सामाजिक भेदभाव और अन्याय के दंश को झेलने वालों के लिए उनकी समाज में इज्ज़त हो, उनकी बेदखली को खत्म किया जाये। उनकी परेशानियों को व्यापक रूप से समझने के लिए दलित साहित्य एवं दलित कहानियों को ठीक से समझने की दरकार है।

दलित कहानियों का यथार्थ उनका या उनके अपने जीवन का यथार्थ है, सच है। जो सदियों से मनुष्य नहीं बल्कि पशु के काबिल ही समझे जाते रहे हैं, और अभी भी लगभग वैसी

ही स्थिति में हैं। इस धारणा पर शास्त्रीय धार्मिक मोहर तो लगी ही है, इसे स्वयं दलित जमात भी मन से स्वीकारे हुए हैं जो पशुवत जीवन जीने को अभिशप्त हैं।

दलित कहानियाँ, समाजिक बदलाव लाने का आह्वान और समाज को गहरे सरोकारों के साथ सवंदेनशील बनाने का आहवान करती हैं। इन कहानियों में आक्रोश है, आग है, लावा है, गुस्सा है, विद्रोह है तो साथ–साथ सवंदेना, मानवीयता और सब्र भी है। न्याय की उत्कट लालसा है, तो समानता की तीव्र ललक भी है। भाईचारे की भावना है, तो उसके साथ आदर पाने की एक लालसा भी है।

दलित कहानियों में विकास–प्रक्रिया के विभिन्न स्तर, रूप और रस मिलेंगे। लेखक गुस्से से लेकर घृणा से गुजरता हुआ, विद्रोह की भावना तक पहुँचा है, लेकिन उचित अनुचित का ध्यान उसे तब भी रहता है। दूसरी तरफ लेखक दलित कहानियों में संगठित होकर सड़ी–गली, बर्बर परम्पराओं या ज़मींदार व पुलिस और धार्मिक पाखण्डों के जुल्म अथवा अधिकारियों के पक्षपातपूर्ण साजिश भरे रूख आदि सबके खिलाफ लड़ने का संकल्प भी करता है। कहीं–कहीं कहानी के पात्र स्वयं दोषी को दंडित करने की क्षमता हासिल कर लेते हैं।

इतना ही नहीं उन्होंने उस नारकीय जीवन को सच्चा और उनकी नियति बताकर उनकी संवेदना को कुंद या कहो कि नष्ट कर दिया, उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों से बहिष्कृत तो कर ही दिया साथ ही धार्मिक कथाओं में चमत्कार और बे–सिर–पैर के अंधविश्वासों पर आधारित कथाएँ गढ़कर उन्हें भयभीत भी किया, लेकिन इस प्रकार का साहित्य दलित साहित्यकार नहीं लिखते, न ही वे लिखना चाहेंगे। वे उस झूठ को जो उन पर गौरवान्वित कर थोपा गया है, नकार रहे हैं। वे उसे अब सही अर्थ दे रहे हैं, वे कोई मिथक भी नहीं गढ़ रहे हैं, वे तो भाग्य, भगवान, अंध–आस्था, अवतार, चमत्कार, अंधविश्वास, रूढ़िवाद, विकृत–परम्परा, संस्कृति, मनुवादी सोच जो कुछ लोगों के ऐश्वर्य के लिए बनायी या रची गई थी, के बदले समानता, भाईचारा, आज़ादी और न्यायपरक सामाजिक व्यवस्था वाली संस्कृति को लाना चाहते हैं, जिसमें जाति का अस्तित्व ही न हो, यदि विचार करें तो यह सभी प्रयास सवर्णों को करने चाहिए, तब सब मिटेगा क्योंकि जाति के जन्मदाता, पोषक व रक्षक वही हैं।

दलित साहित्य के अन्तर्गत कहानी हो, कविता हो या नाटक व लेख उसे समझने के लिए सवर्णों को नयी दृष्टि अपनानी होगी। ये बैखलाए हुए आदमी की कहानियाँ नहीं हैं। ये उस सताए हुए समाज की कहानियाँ हैं, जो मनुष्यता का दावा करना सीख गया है और बराबरी का हक माँग रहा है। ये लोग अब दूसरी दुनिया के यथार्थ को अपनी नियति मानने को तैयार नहीं हैं।

दलित कहानियाँ मूलधारा में, मनुष्यत्व की मानव–श्रेणी में आने के लिए कटिबद्ध हैं। उसके लिए धर्म, भगवान, भाग्य, परम्पराएँ, रूढ़ियाँ और अंधविश्वास सब निरर्थक हैं। वह उन सबके विरूद्ध उठ खड़ा हुआ है। चूंकि इनकी भर्त्सना किए बिना इन्हें नष्ट करना संभव नहीं और इन्हें नष्ट किए बिना नए मूल्य नहीं बन सकते, न ही इनसे उसकी मुक्ति संभव है। इसलिए इनकी कहानियों में इस भर्त्सना की प्रवृत्ति भी पर्याप्त रूप में मिलती है।

जब तक ब्राह्मण मनुवाद के अनुसार ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से और क्षत्रिय भुजाओं से उत्पन्न माने जाते रहेंगे, तब तक शूद्रों को पांव से उत्पन्न माना जाता रहेगा। इसलिए उस कारण को ही मिटाना होगा जो इस धारणा का जन्मदाता है। धारणाएं जल्दी नहीं बदलतीं उनकी उत्पत्ति का स्रोत नष्ट कर उन्हें मारा जा सकता है। यानि कि वे शास्त्र जो इन्हें पशु कहते हैं, अविश्वासी बनाकर नष्ट किए बिना वर्ण के कटघरे से दलितों को निजात दिलाना संभव नहीं हैं। दलित कहानी इन शोषण स्रोतों को नकारती हैं।

दलित कहानी सदियों की इस व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ ही नहीं उठाती बल्कि कुछ सवाल भी पूछती हैं। वह एक गौरवशाली समृद्ध कही जाने वाली संस्कृति की शोषणपरक, एकपक्षीय, व्यवस्था का प्रतिकार करती हैं। साथ ही एक विशाल जनसमूह को 'दास' से भी नीचे पशुवत जीवन में सुखी महसूस करवाने वाली षड़यन्त्रकारी आचार–संहिता को बेनकाब कर समानता, भाईचारे न्याय, जीने का हक आजादी की नई संहिता गढ़ने, अपने को मनुष्य मानकर शिक्षित और संगठित होकर, सामाजिक न्याय और बदलाव का झंडा बुलंद करने की ओर बढ़ती है।

कुछ ऐसे ही प्रमुख दलित कहानीकार हैं जिनकी कहानियों में यह सभी समस्याएँ और इन समस्याओं से डटकर लड़ने की प्रतिबद्धता दिखायी पड़ती हैं, वें इस प्रकार हैं–

1. <u>ओम प्रकाश वाल्मीकि</u>

   दलित कहानीकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि एक महत्त्वपूर्ण नाम है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानियाँ दलित वर्ग के संघर्ष की भावना से पूर्ण और समाज की ब्राह्मणवादी झूठी पाखण्डी नीतियों का पूर्ण बहिष्कार करने वाली कहानियाँ हैं। इनकी कहानियाँ बिना किसी संकोच के समाज द्वारा निर्मित झूठी ब्राह्मणवादी, रूढ़िवादी, परम्पराओं का खण्डन करती हैं। इनके दो कहानी संग्रह है 'सलाम और घुसपैठिए'।

2. <u>मोहनदास नैमिशराय</u>

   मोहनदास नैमिशराय एक सचेत दलित साहित्यकार हैं। इनके साहित्य में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक समस्याओं को मुख्य विषय बनाया गया है। इनकी कहानियों में निम्न वर्ग की दयनीय दशा पाठकों के हृदय को छू जाती है। इनका 'आवाजें' कहानी संग्रह दलित जीवन की वास्तविकता को दिखता है।

3. <u>श्योराज सिंह बेचैन</u>

   श्योराज सिंह बेचैन की कहानियाँ रूढ़िवादी ब्राह्मणों के जातीय चरित्र को उद्घाटित करती हैं। किस तरह दलित वर्ग के हक को सवर्ण लोग छल रहे हैं आदि का यथार्थ चित्रण इनकी कहानियों में उद्घाटित होने के साथ–साथ प्रतिरोधी तेवर में भी दिखता है।

4. <u>जय प्रकाश कर्दम</u>

   जय प्रकाश कर्दम की कहानियाँ दलित वर्ग की पीड़ा, उनकी आशा एवं आकांक्षाओं की भावना से ओतप्रोत हैं। इनकी कहानियों में दलित वर्ग के

स्वाभिमान और हक की आवाज़ विद्यमान है। इनकी कहानी 'चमार' जातिवादी दंश का जीता जागता रूप है।

5. <u>सूरजपाल चौहान</u>

सूरजपाल चौहान संघर्षशील चेतना तथा दृढ़तापूर्वक अस्मिता की लड़ाई–लड़ने वाले दलित साहित्या कारों में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में यथासम्भव परिवर्तन करने का प्रयास किया है। इनका कहानी संग्रह 'हैरी कब आएगा' इसी समाजिक परिवर्तन और अन्याय के प्रति विद्रोह की भावना को प्रकट करता है।

6. <u>विपिन बिहारी</u>

विपिन बिहारी की कहानियाँ दलित साहित्य में अपनी विशिष्ट जगह रखती हैं। इनका 'आधे पर अन्त' कहानी संग्रह दलित जीवन की विभिन्न समस्याओं को सामने रखने में सक्षम है।

7. <u>दयानन्द बटोही</u>

दलित साहित्य का मूल उद्देश्य अन्याय की भेदभाव पूर्ण नीति का पूर्ण बहिष्कार करना है, ये भावना दयानन्द बटोही की कहानियों में सार्थक रूप से अभिव्यक्त हुयी है। इनके कहानी संग्रह 'कफ़नखोर' 'यातनाओं के जंगल', 'सुरंग' दलित वर्ग पर हुए अन्याय, अत्याचार और शोषण का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करते हैं।

8. <u>कावेरी</u>

दलित साहित्यकारों की भांति ही महिला दलित साहित्यकार अपने जीवन के संघर्ष को और यथार्थ को साहित्य के माध्यम से प्रस्तुत करने लगी हैं। ऐसी ही महिला दलित साहित्यकारों में कावेरी प्रमुख हैं। इनका कहानी संग्रह 'द्रोणाचार्य एक नहीं दलित जीवन की वास्तविकता को प्रकट करता है। इनकी कहानी 'सुमंगली' शिक्षित समाज में दुःख देने वालों के प्रति घृणा की भावना को व्यक्त करती है।

9. <u>रजतरानी मीनू</u>

दलित साहित्य में दलित साहित्यकारों के बनाये कथाओं के ढांचे को रजनरानी 'मीनू' ने अपनी लेखनी से तोड़ा है। दलितों की सबसे बड़ी समस्या जातिगत भेदभाव की भावना है लेकिन व्यक्तिगत तौर पर उनकी अपनी भी कुछ समस्याएँ जैसे वैवाहिक जीवन का यथार्थ दरार तथा तलाक आदि समस्याओं पर इनकी कहानियाँ स्त्री संघर्ष को सबलता देती है। ये सभी समस्याएँ इनकी 'वे दिन' कहानी में स्पष्टतः देखी जाती हैं। इनकी कहानी 'सुनीता' भी एक आत्माविश्वासी नारी की कहानी है।

10. <u>सुशीला टांकभौरे</u>

दलित कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं में सुशीला टाकभौरे एक सशक्त नाम हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में जहाँ दलित समाज के सत्य को उभारा है वहीं दलित नारी की पीड़ा का भी वास्तविक चित्रण किया है। उनकी नारी पात्रों में स्वाभिमान से जीने की भावना प्रमुख है। इनका कहानी संग्रह संघर्ष इन्हीं तथ्यों पर आधारित है।

11. <u>एन0 सिंह</u>

दलित साहित्य के प्रखर आलोचकों में एन0 सिंह का नाम ज्यादा जाना पहचाना है। यह एक विद्रोही कवि हैं। डा0 एन0 सिंह अपने दौरे के सजग और जिम्मेदार साहित्यकार हैं। इनकी कहानियाँ समाज की विसंगतियों पर तीखा प्रहार हैं, साथ ही कृत्रिमता के बनावटीपन से दूर हैं।

12. <u>उमराव सिंह जाटव</u>

हिन्दी दलित साहित्य में कहानी विधा के लेखन में उमराव सिंह जाटव एक प्रख्यात कहानीकार है। आपकी कहानियों में सामाजिक विषमता का

चित्रण बहुत व्यापक रूप से हुआ है। इनका कहानी संग्रह है 'आधे दलित का दुख' जो दलित जीवन की वास्तविकता को उजागर करता है।

13. कैलाशचन्द चौहान

कैलाशचन्द चौहान दलित साहित्यकारों में अपनी विशिष्ट भूमिका रखते हैं। आपका कहानी संग्रह 'संजीव का ढाबा' विभिन्न सामाजिक समस्याओं को उजागर करने में पूर्ण सक्षम है।

14. रत्नकुमार सांभरिया

हिन्दी दलित कहानी लेखकों में सांभरिया का अपना एक विशिष्ट स्थान है। इनकी कहानी 'कुजात' एक सफल दलित कहानी मानी जाती है। यह समाज प्रधान कहानी की कोटि में खड़ी होती है। कहानी का मुख्य आशय जातिवाद, छूआ–छूत कौन करता है, जैसे व्यक्तियों का सुधार करना है।

15. टेक चन्द

हिन्दी दलित कहानियों में अपनी सशक्त लेखनी का योगदान देने वालों में टेकचन्द एक महत्त्वपूर्ण नाम है। इनकी 'सूअर क्लास' नामक कहानी आज के दिखावटी प्रगतिशीलों की परत को खोलती है। दलित जीवन पर आधारित कहानियों में यह एक बेहतरीन कहानी है।

16. अनीता भारती

अनीता भारती दलित कहानी लेखिकाओं में एक महत्त्वपूर्ण लेखिका हैं। अनीता भारती की कहानियाँ समाज की व्यवस्था पर व्यंग्य करती हैं। साथ ही समाज की वास्तविक स्थिति को सामने रखती हैं। लेखिका की 'एक थी कोटेवाली' नामक कहानी अध्यापिकाओं की भीतरी दुनिया की कलई खोलती है।

17. मुकेश मानस

मुकेश मानस की कहानी ग्रामीण जीवन में प्रेम की त्रासदी को लेकर लिखी गई कहानी है। इनकी कहानी में ग्राम्य जीवन के उस उत्पीड़न और अनुभव का चित्रण है, जिसे दलित सदियों से सहता आ रहा है।

18. रजनी दिसौदिया

युवा हिन्दी कहानीकारों में रजनी दिसौदिया एक महत्वपूर्ण कहानी लेखिका हैं। इनका कहानी संग्रह 'चारपाई' अनेक साहित्यिक विमर्शों के साथ–साथ स्त्री पक्ष के विभिन्न सन्दर्भों पर आधारित है। इस संग्रह में दस कहानियाँ हैं, संग्रह की प्रत्येक कहानी अपनी तरह से अतिरेक की हदों के बाहर संतुलन के अविष्कार की जद्दोजहद की कहानी है।

19. असंघोष

हिन्दी दलित साहित्य की दूसरी पीढ़ी में असंघोष एक महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय लेखक है। असंघोष केवल कवि नहीं हैं अपतिु इन्होंने कुछ उल्लेखनीय कहानियों का लेखन भी किया है जो समय–समय पर विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है।

20. सूरज बडत्या

हिन्दी दलित साहित्य की बिल्कुल नई पीढ़ी के जिन लोगों ने अपने लेखन से एक उम्मीद जगाई है उनमें सूरज बड़त्या एक जरूरी नाम है। इन्होंने बहुत कम समय में अपने लेखन की ओर लोगों का ध्यान खींचा है, क्योंकि उनका हर लेख किसी ज्वलंत, जरूरी और समकालीन मुद्दे पर एकाग्र होता है। अब तक पत्र–पत्रिकाओं में लगभग इनकी चार दर्जन रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इनका कहानी संग्रह 'कामरेड का बक्सा' दलित जीवन के वास्तविक यथार्थ को प्रकट के साथ–साथ विभिन्न सामाजिक समस्याओं को प्रकट करने वाला सशक्त कहानी सग्रंह है।

विषय का अनावरण

दलित साहित्य की विकास यात्रा को देखें तो हिन्दी दलित साहित्य में कविताओं का सृजन या रचना काफी अधिक मात्रा में हुई है। इसके बाद दलित कहानी अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। यदि 8वें दशक से देखा जाये तो अनेक दलित साहित्यकारों ने कहानी लेखन की परम्परा में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, लेकिन दलित कहानी को अपनी सार्थकता मराठी साहित्यकार बाबूराव बागुल की कहानी 'जब मैंने अपनी जाति छिपायी' से मिली। इसी कहानी के प्रकाशन से मराठी में दलित कहानी लेखन का आविर्भाव हुआ, और आज के आधुनिक समय में अनेक ऐसे दलित कहानीकार हैं जो कहानी लेखन में प्रवृत्त हुए हैं। दलित वर्ग सदियों से जिस वेदना और पीड़ा को भोग रहा है, उस वेदना और पीड़ा का चित्रण दलित कहानियों में एक आक्रोश और विद्रोह के रूप में हुआ है। दलित साहित्य दलितों के ऊपर हुए अत्याचार और शोषण का साहित्य है, जिसमें दलित वर्ग का एक आक्रोश है।

इस आक्रोश और न्याय की उत्कट लालसा हमें दलित साहित्य के अन्तर्गत दलित कहानियों में प्राप्त होती है। दलित साहित्य में दलित कहानियाँ अपना एक विशिष्ट महत्त्व रखती हैं। दलित साहित्यकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से दलित वर्ग की पीड़ा, जीवन जीने की स्वतन्त्रता, समानता और अपने हक की लड़ाई को सामने रखा है। ये कहानियाँ उस समाज का प्रतिनिधित्व करती हैं जो समाज आज अपने मनुष्यत्व का दावा करना सीख गया है।

यह दलित कहानियाँ उन सभी अन्याय और अत्याचारों की गवाह हैं, जिन्हें इस वर्ग के पूर्वजों ने सदियों पहले भोगा था और आज भी भोगने के लिए अभिशप्त हैं। यह समस्या आज किसी एक घर, परिवार, जाति, समाज अथवा देश तक ही सीमित नहीं है, बल्कि प्रत्येक युग में यह वर्ग भेद की समस्या हर समय और हर जगह किसी न किसी रूप में मौजूद रही हैं। यह दलित कहानियाँ इन्हीं समस्याओं को सामने रखती हैं और इन समस्याओं के खिलाफ आवाज ही नहीं उठातीं बल्कि कुछ सवाल भी पूछती हैं।

दलित साहित्य की यह कहानियाँ समाज में एक नए बदलाव को ही नहीं स्थापित करतीं वरन् समाज में बदलाव के लिए इनमें एक विद्रोह की भावना है। यह दलित कहानियाँ पूर्ण रूप से समाज निर्मित, धर्म, भाग्य, भगवान, परम्परा एवं अंधविश्वास आदि का पूर्ण रूप से प्रतिकार कर उनकी अवहेलना करती हैं। समाज के सवर्ण सत्ताधारी वर्ग ने अपने शास्त्रों और अपनी

नीति के आधार पर दलित एवं पिछड़े वर्ग को शिक्षा की धारा से वंचित रखा व अपने मनमाने ढंग से उन्हें दंडित करने के साथ–साथ पशुवत् जीवन जीने के नए–नए विधान या नीतियों का निर्माण किया। ये दलित कहानियाँ दलित वर्ग के इस नारकीय जीवन को उद्घाटित ही नहीं करतीं वरन् समाज के सामने उसकी वास्तविकता को भी प्रकट करती हैं। यातनाओं के जिस वीभत्स रूप को पढ़कर जहां पाठक आहत होता है या केवल पढ़ने मात्र से ही पाठक की रूह सिहर उठती है, उस याचना और दर्द को स्वयं इस वर्ग ने न जाने कितनी ही सदियों से, कितनी ही पीढ़ियों ने सहा है, और आज के आधुनिक युग में भी कहीं न कहीं आज भी उसका वहन कर रही हैं।

दलित साहित्यकारों की यह कहानियाँ समाज को एक नई चेतना और सोच का स्वतन्त्र दायरा देने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह कर रही हैं। क्योंकि साहित्य वह है जो समाज के हित के लिए लिखा जा रहा हो। और दलित कहानियाँ भी उसी मानव हित को महत्व देती हैं, क्योंकि साहित्य में कला की अपेक्षा घाव या प्रहार करने की क्षमता अधिक होती है। दलित साहित्य आनन्द या सौन्दर्यानुभूति के लिए लिखा गया साहित्य नहीं है। बल्कि यह एक परिवर्तन या बदलाव का साहित्य है। इसलिए दलित कहानी में एक कलात्मकता के अतिरिक्त हकीकत की दृष्टि है। वर्तमान व्यवस्था के प्रति एक विद्रोह की भावना है और साथ ही पुरानी लीक से हटकर एक समानतावादी और स्वतन्त्रतावादी सोच का दृष्टिकोण है। इसलिए कहा जा सकता है कि दलित कहानियाँ, कलात्मकता और सौन्दर्यानुभूति की भावना से कोसों दूर है और यह दलित कहानी आज पुरानी लीक से हटकर चलने की मुहिम चलाने के लिए कटिबद्ध है।

<u>प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित शोध कार्य</u>

(क) जगदीश चन्द्र के कथा साहित्य में दलित चेतना– दयानन्द प्रसाद, पी0एच0डी0 शोध, जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी, दिल्ली

<u>समीक्षा</u>

(क) सामाजिक चेतना का सशक्त आह्वानः साभंरिया जी की कहानियाँ– डॉ0 राकेश रायपुरिया, दलित अस्मिता अंक जुलाई–दिसम्बर 2012

(ख) दलित साहित्य के प्रतिमानः एक विवेचन– डॉ0 जगदीश शरण

(ग) प्रेमचन्द की कहानियों में दलित जीवन– राजेश कुमार मल्ल

(घ) दलित कहानी की ज़मीनः देवेन्द्र चौबे, वसुधा जुलाई–सितम्बर 2003

(ङ) भारतीय दलित साहित्यः स्वरूप एवं शोध की नई संभावनाएं– दिलीप कठेरिया, दलित अस्मिता, जनवरी–जुलाई 2014

(च) दलित कहानीः छिपी जाति का दर्द– प्रो0 बालकृष्ण कवठेकर

पुस्तक समीक्षा

(क) दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक संरोकार– रमणिका गुप्ता, समीक्षा प्रकाशन।

(ख) अम्बेड़करवादी कहानी रचना और दृष्टि– तेजसिंह, लोकमित्र प्रकाशन, 2010

(ग) दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ– ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्णन प्रकाशन, 2013

(घ) दलित साहित्य पक्ष–प्रतिपक्ष– सूरज बड़त्या, फ्रेन्डस फॉर डेवलपमेन्ट प्रकाशन, 2007

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य

साहित्य के अन्तर्गत एक ऐसे साहित्य का सवाल जो न जाने कितनी ही सदियों से अपने जीवन संघर्ष की गाथा का चित्रण करता आ रहा है। ये गाथा उस वर्ग की है जिसे समाज ने श्रेणी के नाम पर सबसे निचले पायदान पर रखा है, और उसको अपने मनमाने ढंग से छला है। यह दलित वर्ग आज अपने साथ हुए सभी अन्यायों को प्रकट करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह प्रतिबद्धता उनके कहानी लेखन में स्पष्ट रूप से दर्शनीय है। दलित कहानीकारों की कहानियाँ पूर्ण रूप से दलित वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं। दलित कहानी के इस स्वरूप को शोध कार्य के माध्यम से विश्लेषित करना एवं उसका गहन अध्ययन विभिन्न विचारों के माध्यम से करना शोध कार्य की आवश्यकता, महत्ता और सार्थकता को सिद्ध करता है। हिन्दी दलित कहानियों में दलित वर्ग के समस्त जीवनानुभवों का सूक्ष्म चित्रण हुआ है, जो उनकी वास्तविक स्थिति को यथार्थ के पटल पर अंकित करता है। हिन्दी दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों में अपने संघर्ष की सम्पूर्ण गाथा एवं अपने इंसान होने के वजूद को विभिन्न कहानियों की रचना के माध्यम से अंकित किया है, जिसका विश्लेषण करना शोधकार्य की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।

हिन्दी दलित कहानियों में दलित साहित्य की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए विभिन्न विद्वानों एवं समाज सुधारकों के योगदान पर विचार किया जाएगा। हिन्दी दलित कहानी अपने सौन्दर्यशास्त्र की निर्मिति अपनी परिस्थिति एवं अपने साहित्य के अनुरूप कर रही है या उसका सौन्दर्यशास्त्र शिष्ट साहित्य के साथ अपनी समानता नहीं रखता आदि तर्कों को लेकर दलित कहानी के सौन्दर्य मूल्यों एवं हिन्दी साहित्य में निहित सौन्दर्य मूल्यों का गहराई से विश्लेषण किया जायेगा। साथ ही हिन्दी दलित कहानी में निहित व्यवस्था के प्रति विरोध को लेकर उसके प्रारम्भिक समय और दलित समाज के अन्य पिछड़े वर्गों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाएगा। हिन्दी दलित कहानी का उद्‌भव कैसे हुआ और वह किस परम्परा के अनुरूप विकास की धारा को प्राप्त हुई एवं किन प्रमुख कहानीकारों ने इसके प्रगति पथ को सार्थक सहयोग प्रदान किया आदि पर गहन विचार–मंथन किया जायेगा। हिन्दी दलित कहानियों में शिल्प विधान का सूक्ष्माति सूक्ष्म अध्ययन एवं विश्लेषण करते हुए हिन्दी दलित कहानियों में प्रयुक्त भाषा के प्रयोग पर गहन चिन्तन एवं विश्लेषण करने के साथ–साथ प्रयुक्त बिम्ब, लोक मुहावरे, कहावतों, लोकोक्तियों आदि का गहनता से अध्ययन करना प्रमुख उद्‌देश्य रहेगा। समीक्षात्मक, विश्लेषणात्मक शोध प्रविधियों का प्रयोग किया जायेगा न केवल पुस्तकें, पत्र पत्रिकायें, संदर्भ ग्रंथ आदि का अध्ययन किया जायेगा अपितु विषय से सम्बन्धित लेखकों से विचार–विमर्श के साथ–साथ साक्षात्कार–प्रश्नावली आदि शोध प्रविधियों का समुचित प्रयोग करते हुए शोध को सार्थक बनाने का प्रयास रहेगा।

हिन्दी दलित कहानी में व्यवस्था विरोधी स्वर

(सन् 1995 से 2014 तक)

प्रथम अध्याय : दलित साहित्य की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

(क) आजीवक, महात्मा बुद्ध, चार्वाक, मखली गोशाल, कबीर (संत साहित्य)

(ख) महात्मा ज्योतिबा फुले, डा0 अम्बेडकर, बाबू मंगूराम, गोविन्द गुरु, स्वामी अछूतानन्द, पेरियार मराठी दलित साहित्य आदि

द्वितीय अध्याय : व्यवस्था विरोधी स्वर का स्वरूप

(क) 1. व्यवस्था की विषमतागत सामाजिक एवं सांस्कृतिक संरचना

2. वर्ण व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था विरोधी स्वर

3. व्यवस्था की धर्म, संस्कृति एवं आध्यात्मिक वर्चस्व के प्रतिरोधी स्वर एवं दृष्टिकोण

(ख) दलित साहित्य के सौन्दर्यात्मक मूल्य

(ग) दलित कहानी के सौन्दर्य मूल्यों की प्रासंगिकता

मूल्यांकन

तृतीय अध्याय : हिन्दी दलित कहानी उद्‌भव और विकास एवं स्वरूपगत संरचना

(क) हिन्दी दलित कहानी का उद्‌भव एवं पृष्ठभूमि

(ख) हिन्दी कहानिों में दलित समुदाय की अभिव्यक्ति

(ग) प्रगतिशील एवं जनवादी विकास दृष्टि एवं मूल्य

(घ) प्रमुख दलित कहानीकार एवं उनका मूल्यांकन

मूल्यांकन

चतुर्थ अध्याय : दलित कहानी में व्यवस्था विरोधी चेतना

(क) दलित कहानी की अन्तर्वस्तु (प्रारम्भिक दौर में)

(ख) प्रतिरोधी अन्तर्वस्तु का नया फलक (दलित स्त्री, स्त्री आदिवासी, दलित)

(ग) दलित अन्तर्वस्तु की अन्य कहानी (हिज़ड़ा समुदाय, दलित मुस्लिम, दलित इसाई एवं दलित सिक्ख)

मूल्यांकन

पंचम अध्याय : दलित कहानी की भाषा एवं शिल्पविधान

(क) दलित कहानी की भाषायी बुनावट

(ख) बिम्बों का नया फलक

(ग) लोक मुहावरों, लोकोक्तियों, कहावतों की नयी इबारत

मूल्यांकन

उपसंहार

परिशिष्ट–

1. आधार ग्रन्थ
2. कोश
3. विश्वकोश
4. सन्दर्भ ग्रन्थ
5. पत्र–पत्रिकाऐं
6. साक्षात्कार
7. प्रश्नावली

आधारग्रन्थ

क्र0 स0	रचनाकार	रचना	प्रकाशन	संस्करण
1	ओमप्रकाश वाल्मीकि	सलाम	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2000
2	ओमप्रकाश वाल्मीकि	घुसपैठिए	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली	2009

3	मोहनदास नैमिशराय	आवाजें	दया पब्लिशिंग हाउस	2011
4	सूरजपाल चौहान	नया ब्राह्मण	हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली	2014
5	श्योराज सिंह बैचेन	भरोसे की बहन	वाणी प्रकाशन दिल्ली	2010
6	जयप्रकाश कर्दम	तलाश	पांडुलिपि प्रकाशन	2005
7	जयप्रकाश कर्दम	खरोंच	स्वराज प्रकाशन	2013
8	दयानन्द बटोही	सुरंग	गौतम बुक सेन्टर, दिल्ली	2009
9	सुशीला टांकभौरे	टूटता बहम	शरद प्रकाशन, नागपुर	1997
10	सुशीला टांकभौरे	अनुभूति की घेरे	शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली	1997
11	सुशीला टांकभौरे	संघर्ष	शरद प्रकाशन, नागपुर	2006
12	रत्नकुमार सांभरिया	दलित समाज की कहानियाँ	अनामिका पब्लिकेशन	2011
13	रत्नकुमार सांभरिया	एयरदन का घोड़ा	अनामिका पब्लिकेशन	2015
14	उमराव सिंह जाटव	आधे दलित का दुख	यूनिस्टार बुक पब्लिकेशन्स, चंड़ीगढ़	2007
15	रजतरानी मीनू	कौन है हम		
16	अनीता भारती	एक थी कोटे वाली	लोकमित्र प्रकाशन	2012
17	कैलाशचन्द चौहान	संजीव का ढाबा	आरोही प्रकाशन, दिल्ली	2012
18	रजनी दिसौदिया	चारपाई	स्वराज प्रकाशन, दिल्ली	2014
19	सूरज बडत्या	कामरेड का बक्सा	वाणी प्रकाशन, दिल्ली	2008

सहायक ग्रंथ

1. आधुनिकता के आइने में दलित–अभयकुमार दुबे, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2009
2. दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार–रमणिकागुप्ता, समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली संस्करण–2001

3. डा0 अम्बेडकर का सम्पूर्ण वाड्मय 22 खण्डों में, प्रकाशन संस्थान भारत सरकार, दिल्ली
4. परम्परा इतिहास बोध और संस्कृति–श्यामचरण दुबे राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2000
5. दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र–ओमप्रकाश वाल्मीकि, वाणी प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2014
6. सत्ता संस्कृति और दलित सौन्दर्यशास्त्र–सूरज बडत्या, अनामिका प्रकाशन, संस्करण–2009
7. जातिवाद और रंगभेद –चमनलाल, वाणी प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2009
8. दलित साहित्य अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ–ओमप्रकाश वाल्मीकि, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2013
9. एन एन्थोलॉजी आफ दलित लिटरेचर–एलीना जिलट अनुवाद मुल्कराज आनन्द, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली, संस्करण–2013
10. परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, पूरन चन्द्र जोशी, राजकमल प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2009
11. दलित हस्तक्षेप–रमणिका गुप्ता, शिल्पग्राम प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2004
12. दलित साहित्य की भूमिका हरपाल सिंह 'हरूष', जवाहर पुस्तकालय मथुरा संस्करण–2005
13. अम्बेडकरवादी विचारधारा और समाज तेज सिंह, स्वराज प्रकाशन दिल्ली, संस्करण–2008
14. दलित साहित्य की अवधारणा और प्रेमचन्द, सदानन्द शाही, प्रेमचन्द साहित्य संस्थान प्रकाशन, संस्करण–2000
15. साहित्य और दलित चेतना–महीप सिंह, चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, अभिव्यंजना प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण–2009
16. सत्ता समाज और दलित आनन्द तेलतुमड़े, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन संस्करण–2011
17. दलित साहित्य पक्ष प्रतिपक्ष–सूरज बडत्या, फ्रेंडस फॉर डेवलपमेन्ट दिल्ली संस्करण–2007
18. समय और संस्कृति श्यामचरण दुबे, वाणी प्रकाशन दिल्ली, द्वितीय संस्करण–2000

सहायक पत्र–पत्रिकाएँ–

1. दलित अस्मिता, संपादक विमल थोरात, त्रैमासिक पत्रिका, एंड्रयूगंज दिल्ली
2. नया पथ, संपादक मुरली मनोहर प्रसाद सिंह, अर्द्ध वार्षिक दिल्ली।

3. बयान, संपादक मोहनदास नैमिशराय, नई दिल्ली।
4. कथादेश–संपादक हरिनारायण मासिक पत्रिका, नई दिल्ली।
5. वाक–संपादक सुधीश पचौरी त्रैमासिक दिल्ली।
6. जनसत्ता अखबार–दैनिक समाचार पत्र, संपादक–ओम थानवी, दिल्ली।
7. तद्भव–संपादक अखिलेश, इलाहाबाद।
8. युद्धरत आम आदमी, रमणिका गुप्ता, त्रैमासिक, दिल्ली।
9. शुक्रवार, विष्णु नागर, मासिक पत्रिका, दिल्ली।

शोध निर्देशक के मार्गदर्शन से इसमें उचित परिवर्तन सम्भव है।